साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 55, फरवरी(द्वितीय) , 2019

बिट्टू

डॉ. रंजना वर्मा

आज सामने जमीन पर पड़े बिट्टू के शव को देख कर बहुत कुछ याद आ रहा है । चौदह साल का बिट्टू ..... अभी उसने दुनिया देखी कहां थी ? लेकिन इतनी छोटी सी उम्र में ही अपनी आयु से कहीं बड़ा हो गया था वह । एक पल में ही कितना बड़ा हो गया था उसका संपूर्ण व्यक्तित्व ।

बिट्टू का शव खून से लथपथ हो रहा था । थोड़ी देर पहले ही उसने एक अनियंत्रित ट्रक की चपेट में आकर प्राण त्याग दिए थे ।

रोज की तरह उस दिन भी वह छुट्टी की घंटी बजते ही स्कूल के गेट के पास आकर खड़ा हो गया था । यहीं से उसे और उसके जैसे दूसरे अनाथ बच्चों को घर ले जाने के लिए अनाथ आश्रम का सहायक आया करता था । वह बच्चों की गिनती करता और फिर उन्हें लाइन बना कर सड़क के किनारे किनारे पटरी पर चलाता हुआ अनाथ आश्रम तक ले जाता । बिट्टू अन्य बच्चों से बड़ा था इसलिए वह लाइन में सबसे पीछे खड़ा होता था । सहायक आगे आगे चलता और पूरी लाइन उसके पीछे पीछे । सबसे अंत में चलता हुआ बिट्टू ध्यान रखता था कि कोई बच्चा लाइन से अलग होकर सड़क पर न चला जाए ।

उस दिन भी हमेशा की तरह सहायक के आने पर बच्चों की लाइन बनवा कर वह सबसे पीछे खड़ा हो गया । सभी बच्चे पंक्तिबद्ध हो कर सहायक के पीछे पीछे चल रहे थे । मुख्य सड़क पर आने पर बिट्टू और ज्यादा सावधान हो जाया करता था । आज भी वह सतर्क था ।

अचानक एक ओर एक बड़ा गुब्बारा पड़ा दिखाई दिया जो शायद किसी वाहन से जाते बच्चे के हाथ से छूटकर गिर पड़ा था और अब हवा के साथ

इधर-उधर उड़ रहा था । उसे देख कर नन्ही दीपा का मन ललचा गया और वह लाइन में से निकलकर गुब्बारा लेने के लिए दौड़ पड़ी ।

"दीपा ....नहीं ....मत जाओ ...", बिट्टू चिल्लाया ।

सभी बच्चे रुक कर देखने लगे । तभी एक ओर से तेज गति वाले अनियंत्रित ट्रक को आता देखकर बिट्टू दीपा की ओर दौड़ पड़ा । झपट कर उसने दीपा को उठाया और किनारे की ओर धकेल दिया । तब तक ट्रक उसे रौंदता हुआ चला गया ।

बच्चों और दर्शकों की चीखों में उस मासूम बालक की चीख दब कर रह गई । ट्रक देखते ही देखते मोड़ पर जाकर गुम हो गया । लोग घटनास्थल की ओर दौड़ पड़े ।

सड़क पर भीड़ लगी देख कर मेरे ड्राइवर ने कार किनारे से ले जाने का प्रयास किया तो मैंने उसे रोक दिया ।

"जरा देखो तो ... क्या हो गया है ? शायद यहां किसी को हमारी जरूरत हो ।"

ड्राइवर ने कार किनारे लगाई और कार से उतर कर भीड़ में गुम हो गया । थोड़ी देर बाद आकर उसने बताया -

" कोई अनाथालय का बच्चा था । ट्रक की चपेट में आकर मर गया ।"

"अनाथालय का बच्चा?" मैं चौंक पड़ी ।

अभी कुछ दिन पूर्व ही नगर के प्रसिद्ध अनाथालय में मैं बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण करने और उन्हें नेत्रदान के संबंध में बताने के लिए अपनी टीम के साथ गई थी । अनाथ आश्रम के छोटे-छोटे मासूम बच्चों के चेहरे मेरी आंखों के सामने घूम गए और मैं कार से उतरकर भीड़ की ओर बढ़ गई ।

ड्राइवर ने भीड़ में से मेरे लिए रास्ता बनाया और मैं घटनास्थल तक जा पहुंची । वहां सामने एक बच्चे का शव पड़ा था । खून से लथपथ । देखने से ही उसके मृत होने का आभास हो रहा था फिर भी मैंने आगे बढ़ कर उसकी नाड़ी देखी जो बंद हो चुकी थी । ड्राइवर ने शव को सीधा किया तो मैं चौंक पड़ी,

"अरे ,यह तो बिट्टू है ।" उसका पूरा शरीर खून से लथपथ था फिर भी चेहरा सही सलामत था । और सलामत थी उसके चेहरे पर छाई मासूमियत । आज उसके खून से लथपथ शरीर को देखकर बहुत कुछ याद आ रहा था मुझे ।

पिछली बार जब हम डॉक्टरों की टीम स्कूलों में जाकर बच्चों के स्वास्थ्य परीक्षण की जिम्मेदारी निभा रही थी तब एक दिन बातों ही बातों में विश्वास ने कहा था -

"अच्छे अच्छे स्कूलों में बच्चों के स्वास्थ्य परीक्षण से अधिक उन बच्चों के स्वास्थ्य के परीक्षण की जरूरत है जिन्हें ढंग का खाना भी नहीं मिलता ।"
"क्या मतलब ? ऐसा अबकहां होता है कि बच्चों को ठीक से खाना भी ना मिले मैंने पूछा था मैं अमीरों के बच्चे या उनके लिए नहीं कह रहा हूं जिनके माता-पिता, अभिभावक उनकी परवरिश कर रहे हैं । मैं तो उन बच्चों की बात कर रहा हूं जो अनाथ और निराश्रित है ।"

विश्वास ने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहा था । और उस विद्यालय का काम समाप्त करके हम वहां के प्रसिद्ध अनाथ आश्रम में पहुंच गए थे । वहां पर बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण करते हुए हमें उनकी दुर्बलता , पोषण की कमी तथा उपेक्षा के कारण उत्पन्न होने वाली असुरक्षा की भावना का एहसास हुआ ।

हम वहां तीन दिन तक रहे । बच्चों के स्वास्थ्य की परीक्षा करने और वहां रहने वाले बच्चों को जानने पहचानने उन्हें समझने में सबसे अधिक सहयोग हमें बिट्टू ने दिया था । चौदह साल का यह मासूम बच्चा उस समय आश्रम का दिल बना हुआ था । छोटे-छोटे बच्चे अपनी सारी समस्याएं सारे दुख

अपने बिट्टू भैया के सामने उड़ेल देते और वह अपनी बुद्धिमत्ता से उनका समाधान कर देता । उस मशीनी वातावरण में एक वही बच्चा था जो पूरी जिंदादिली से दिल बनकर धड़क रहा था ।

तीसरे दिन हमने उन बच्चों को नेत्रों के महत्व और उनकी सुरक्षा करने तथा मरने के बाद आंखें दान करने के महत्व को समझाया तो बिट्टू ने बड़े भोलेपन से पूछा था -

"क्या हम बच्चे अभी अपनी आंखें दान दे सकते हैं?"

"हां , क्यों नहीं और इसमें कोई कष्ट भी नहीं होता क्योंकि आंखें हमेशा मरने के बाद निकाली जाती हैं । एक आदमी के मरने पर उसकी दोनों आंखें दो अलग-अलग व्यक्तियों को लगा दी जाती है । और इस प्रकार दो व्यक्ति उन आंखों से दुनिया देख सकते हैं । उनकी अंधेरी दुनिया रोशन हो सकती है ।"मैंने समझाया ।

"तो मैं भी अपनी आंखें दान करना चाहता हूं डॉक्टर दीदी !" बिट्टू ने आगे बढ़कर कहा ।

"क्यों ? तुम अपनी आंखें किसे देना चाहते हो ?" मैंने मुस्कुरा कर पूछा ।

"वह गुड़िया है न डॉक्टर दीदी! उसे कुछ दिखाई नहीं देता । मेरी आंखें उसे दे दी जाएंगी न ? वैसे भी मेरे पास दो आंखें हैं तो एक आंख इसे लगा दीजिए । फिर हम दोनों देख सकेंगे ।"

बिट्टू ने उत्साह में भरकर पाँच वर्ष की बच्ची गुड़िया को गोद में लेकर कहा तो मैं उस मासूम के गर्व भरे मुख को देखती ही रह गई । उसकी त्याग की इस अपूर्व भावना ने मुझे अभिभूत कर दिया । नन्हीं सुंदर सी गुड़िया के चेहरे पर सजी वह बड़ी-बड़ी आंखें ज्योति हीन थी इसे हम उसी क्षण जान पाए । बिट्टू ने जिद करके नेत्रदान का फार्म भरवा कर उस पर अपना नाम लिख दिया था । वह अभी भी मेरे पास में मौजूद था ।

मैंने फोन करके पुलिस को सूचना दी और एंबुलेंस के लिए अस्पताल भी फोन कर दिया । उस नन्हे फरिश्ते की आखिरी इच्छा पूरी करने के लिए मैंने कमर कस ली । उसकी खूबसूरत आंखें अब नन्ही गुड़िया के नेत्रों में ज्योति बन कर रहेगी तभी तो उसकी आत्मा को संतोष मिलेगा यही होगी हम सबकी उसके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि । दुनिया से जाते जाते भी वह मासूम किसी की जिंदगी को रोशन कर के हमें आत्महत्या का वह पाठ पढ़ा गया जिसका ज्ञान सारी उम्र नहीं हो पाता ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें